भूकम्प की अशंका

वाराह मिहिर की बृहत संहिता में लिखा हैं कि भूकम्प का कोई विशेष ग्रह योग अथवा विशेष नियम नही हैं ये कई प्रकार से होता हैं मूल सिध्दात ये हैं कि भूकम्प पृथ्वी की उन्नति और परिवर्तन के संकेत होते हैं । हम मनुष्यो के लिये भले ही ये आपदा अथवा विपति की रचना करते हों । पृथ्वी की रचना से लेकर ही ये होते रहे हैं, जैसे जैसे पृथ्वी ने अपना वर्तमान आकार लिया हैं ये कम होते गये हैं ।

बहुत पहले जब पृथ्वी का जन्म हुआ था ता ये बहुत गर्म और लावा युक्त थी इस पर जब पपड़ी बनना आरंभ हुई तो लावा अंदर की तरफ जाने लगा । लावा की वजह से अंदर गर्मी के बढ़ जाने से ज्वालामुखी की तरह विस्फोट होते थे और लावा बाहर निकल आता था । फिर पपड़ी बनती थी और फिर यही क्रम दोहराया जाता था । इससे पृथ्वी पर बड़े बड़े पहाड़ों का निर्माण होता था और वो पलक झपकते ही अदृष्य भी हो जाया करते थे । इससे बड़े पैमाने पर भूकम्प होते थे । कालातंर में निरंतर बारिश और पृथ्वी की परिवर्तनशीलता ने इन्हे कम कर दिया और ये धीरे धीरे कम होते चले गये । लावायुक्त पृथ्वी निरंतर ठोस होती रही हैं और बचा खुचा लावा पृथ्वी में कंहि गहराई चला गया हैं । जब जब ये लावा उपर उठता हैं अथवा कुपित होकर बाहर निकलना चाहता हैं तो भूकम्प होते हैं अथवा जंहा कंहि इसे बाहर निकलने का रास्ता मिलता हैं तो ज्वालामुखी विस्फोट होते हैं । पृथ्वी की अपनी गतिशीलता अथवा परिवर्तनशीलता ने भी भूकम्प की भूमिका बनाई हैं ।

विज्ञान के अनुसार कई परतों में ठोस हुई पृथ्वी जब कभी परिवर्तन के दौर से गुजरती हैं तो ये परतें आपस में रगड़ खाती हैं अथवा एक दूसरे के उपर चढ़ जाती हैं । फलस्वरुप हम भूकम्प को मेहसूस करते हैं, इन परतों को वैज्ञानिक प्लेट कहते हैं । इस तरह भूकम्प कभी पृथ्वी के अदंर समाये लावे की वजह से होते हैं, तो कभी पृथ्वी के अपने परिवर्तन से होते हैं और ग्रह योग से होने वाले भूकम्प तत्व संबंधी हेरफेर भी होते हैं । परन्तु हर बार ग्रह योग के तत्व संबंधी हेरफेर से ही भूकम्प होते हैं एसा कहना आसान नही होगा । इसलिय भूकम्प की भविष्यवाणी आसान नही हैं । इसके लिये बहुत अभ्यास की आवश्यकता होगी ।

इसमें कभी पृथ्वी की परिवर्तनशीलता कार्य करती हैं तो कभी इसमें समाया लावा कार्य करता हैं तो कभी ग्रहयोगों के तत्व संबंधी नियम कार्य करते हैं और इसी से पृथ्वी पर होने वाले भूकम्पों में विभिन्नता देखी गई हैं । फिर भी कुछ ऐसे ग्रह योग हैं जिससे भूकम्प को समझने में आसानी होती हैं । विज्ञान की गणना, पृथ्वी की परिवर्तशीलता और ग्रहयोगों का तालमेल बनाया जाये तो भूकम्प की सटीक भविष्यवाणी की जा सकती हैं ।

ग्रहों के तत्व संबंधी नियम ये हैं कि आकाश तत्व और अग्नि तत्व में सामनता आ जाये तो भूकम्प होते हैं । आकाश तत्व का कारक गुरु हैं, अग्नि तत्व का कारक मंगल, दोनो ही ग्रह ऐक ही राशि में समान अशों पर हो तो ये भूकंम्प होने की सभावंना बनती हैं । राहु से मंगल सप्तम हो, मंगल से बुध पंचम हो और बुध से केन्द्रस्थ चन्द्र हो तो भूकम्प होने की सभांवना होती हैं । शनी के वक्रि होने की अवस्था में भी भूकम्प की संभावना अधिक होती हैं ।

जब भी भूकम्प हुऐ हैं चन्द्र को शनी के पास ही संचार करते देखा गया हैं और मंगल से शनी की युति अथवा दृष्टि भी पायी गई हैं । ये भारतीय भूकम्पों में विशेष विचारणीय तथ्य हैं । विज्ञान के पास कोई सटीक कार्य प्रणाली अथवा कोई ठोस सबूत नही हैं कि जिससे भूकम्प के विषय में कोई भविष्य वाणी की जा सके ।

आजकल ७३ अशं के आसापास वाले इलाके में अधिकतर भूकंम्प हो रहे हैं । वैज्ञानिक गणना के अनुसार ऐसे लगता हैं कि यहां प्लेट हिल रही हैं और आगे भी इसी स्थान पर भूकम्प होने का अंदेशा हैं । २२ जून, २००८ से मंगल सिंह में और गुरु, धनु में हैं अर्थात दोनों दृष्टि संबंध से जुड़ रहे हैं । आकाश तत्व और अग्नि तत्व में समानता बन रही हैं । इसी सिंह राशि में शनी पहले ही विद्यमान हैं अर्थात भूकम्प के ग्रह योगों में शनी-मंगल की युति वाली शर्त भी पुरी हो रही हैं । ये संकेत हैं कि भूकम्प की भूमिका बन रही हैं ।

इस ७३ अंशो वाले इलाके पर जो स्थान पड़ते हैं वे हैं मुंबई, गुजरात, राजस्थान, जम्मू काश्मीर, पाकिस्तान और आगे कजाकिस्तान, रुस, कोलम्बो, माले और फिर यही ७३ अंशो वाली पट्टी समुन्द्र के अंदर से भी गुजरती हैं अर्थात भूकम्प अगर होता हैं तो समुन्द्र में भी सुनामी उठा सकता हैं । परन्तु ग्रह आजकल अग्नि राशियों में अधिक हैं इससे लगता हैं कि जल से अधिक छेड़खानी नही होगी अर्थात सुनामी का खतरा कम हैं ।

इस तरह २२ जून, २००८ से ०६ अगस्त, २००८ तक, जब तक मंगल, शनी से युति बनाये रखेगा भूकम्प का अदेंशा बना रहेगा । इस बीच जब जब चन्द्र, शनी के आसपास संचार करेगा भूकम्प की तीव्र संभावना बनेगी । इस तरह ०३ जुलाई, २००८ से १० जुलाई, २००८ और ०१ अगस्त, २००८ से ०६ अगस्त, २००८ के दौरान चन्द्र, शनी के आसपास संचार करेगा और भूकम्प की तीव्र संभावना रहेगी ।